ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 12 | कुल पृष्ठ-8 | 25 अप्रैल से 1 मई, 2024 | दयानन्दाब्द 199 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 | सम्वत् 2080 | चै. कृ.-10

आर्य समाज माण्डल बस्ती, नई दिल्ली का 80वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के हुए प्रभावशाली प्रवचन

ऋग्वेद शतकम् महायज्ञ का हुआ आयोजन

आर्य समाज माण्डल बस्ती, नई दिल्ली का 80वाँ वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित हुआ। 19, 20 व 21 अप्रैल, 2024 को आयोजित हुए इस वार्षिक समारोह में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, प्रखर वक्ता स्वामी आर्यवेश जी के प्रातः एवं सायं प्रभावशाली प्रवचनों की धूम रही। स्वामी जी को सुनने के लिए क्षेत्र की अन्य आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में सम्मिलित होते रहे। इन तीन दिनों में विशेष रूप से सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आर्य समाज विरला लाईन्स के पुरोहत श्री कंवरपाल शास्त्री, आर्य समाज जे.जे. कालोनी के धर्माचार्य श्री संतोष शास्त्री, आर्य समाज गुजरांवाला टाउन के धर्माचार्य श्री अभयदेव शास्त्री, श्री अंकित शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य समाज डोलीवालान के प्रधान श्री वागीश शर्मा, आर्य समाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, आर्य समाज देवनगर के मंत्री श्री रमेश बेदी, प्रधान श्री सुशील बाली, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चढ्डा, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य आदि गणमान्य नेता एवं विद्वान् भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

ऋग्वेद शतकम् यज्ञ के ब्रह्मा पद को आर्य समाज मॉडल बस्ती के धर्माचार्य श्री जय प्रकाश शास्त्री ने सुशोभित किया और स्वामी आर्यवेश जी का सान्निध्य रहा। युवा आर्य भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य के जोशीले भजनों ने भी श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया।

अपने प्रवचनों के द्वारा स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता एवं सफलता के मूल सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मनुष्य का जीवन अन्य प्राणियों से विशेष एवं श्रेष्ठ है। अतः इसे सार्थक एवं सफल बनाने के लिए मनुष्य बनने की दिशा में प्रत्येक व्यक्ति को प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में किसी भी प्रकार के दुर्गुण, दुर्व्यसन, अज्ञान एवं अविद्या आदि दोष नहीं रहना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सही अर्थों में पथिक बन सके। स्वामी आर्यवेश जी ने 21 अप्रैल को अपने अन्तिम व्याख्या में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के योगदान एवं महान् कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को उत्साहित किया और बताया कि वर्तमान समय में स्वामी दयानन्द जी के कार्य एवं उनके सिद्धान्त और अधिक प्रासंगिक हो गये हैं। अतः हमें वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा एवं आर्य समाज के संगठन की सुरक्षा के लिए जागरूक होकर कार्य करना होगा। महर्षि के अनुयायी होने के नाते आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी को सिद्धान्त के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहिए। कितनी ही बड़ी विपत्ती आ जाये किन्तु हम वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत किसी भी विचार एवं कार्य को अपना अनुमोदन एवं समर्थन न दें। यह प्रेरणा महर्षि दयानन्द जी के जीवन से हमें मिलती है।

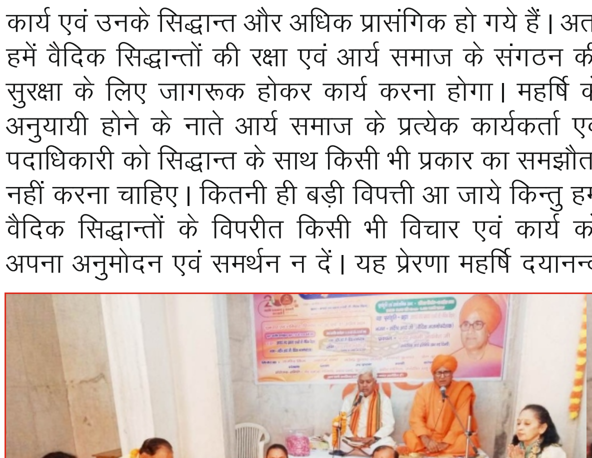

इस तीन दिवसीय वार्षिक समारोह की समुचित व्यवस्था आर्य समाज के संरक्षक श्री राजीव विज जी की प्रेरणा से समाज के प्रधान श्री आलोक शर्मा, उपप्रधान श्री नरेन्द्र कुमार जग्गी, मन्त्री श्री आदर्श कुमार आहूजा एवं कोषाध्यक्ष श्री प्रेम कुमार आदि के अतिरिक्त पुष्पावती पुरी, दयानन्द आदर्श विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश गोगिया, उपप्रबन्धक श्रीमती आशा शर्मा एवं प्रधानाचार्या रीतू रूस्तगी तथा धर्माचार्य श्री जय प्रकाश शास्त्री ने विशेष पुरुषार्थ करके की। इस उत्सव की सफलता में स्त्री आर्य समाज की श्रीमती आरती गोगिया, श्रीमती मधु जग्गी, श्रीमती शारदा आहूजा, श्रीमती सुमन आहूजा, श्रीमती नेहा आहूजा, श्रीमती आशा शर्मा, स्वाती गोगिया एवं मानसी आहूजा आदि बहनों का भी विशेष योगदान रहा।

समारोह के स्वागत समिति के सदस्य श्री नरेश अग्रवाल, श्री प्रदीप गोगिया, श्री जगदीश आहूजा, श्री दीपक खुराना, श्री आकाश शर्मा, श्री धर्मेश आहूजा, श्री दीपक मेहरा, श्री संजय सैनी, श्री महेश सैनी, श्री गोविन्द आहूजा एवं श्री प्रमोद गुप्ता आदि ने भी अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

आर्य समाज मॉडल बस्ती एक सक्रिय आर्य समाज है। इसके समस्त पदाधिकारियों को सफल समारोह के लिए कोटिशः बधाई एवं धन्यवाद प्रदान किया जाता है। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

''मानव–निर्माण में शिक्षा और संस्कारों का सम्बन्ध''

–पं० जगदीश चन्द्र ''वसु''

मानव निर्माण करना, अथवा मानव को मानव बनाना वैदिक–धर्म का प्रधान अंग हैं। हमारे जीवन पर शिक्षा और संस्कारों का गहरा सम्बन्ध होता है जब बालक पैदा होता है तो पिछले जन्मों के कर्मानुसार उसके आत्मा में कई प्रकार के संस्कार विद्यमान रहते हैं, उत्तम शिक्षा मिलने पर उसका मन शुद्ध हो जाता हैं। यदि ऐसा न हो तो उसका चित्त और मलिन हो जाता हैं, अतः यह जरूरी हैं कि बालक की उचित शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाये। बालक की आधार शिला माता अपने गर्भ में रखती हैं। वह गर्भस्थ बच्चे को जिस प्रकार के संस्कार दे देगी, वैसा ही वह आगे बनेगा। वहीं संस्कार उसकी मुख्य प्रकृति या प्रवृत्ति बन, उसका जीवन–पर्यन्त संचालन करती रहेगी। उदाहरण के लिये– जिस प्रकार पृथ्वी माता अपने गर्भ में जिस वस्तु को सोना, लोहा, कोयला, हीरा आदि बना देगी, उसके मूल गुण को फिर संसार का कोई भी वैज्ञानिक नहीं बदल सकता। इसी प्रकार माता अपने गर्भ में जिस बालक को– सात्विक, राजसिक, व तामसिक प्रकृति प्रदान कर देगी, फिर कोई भी आचार्य (गुरु) उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता। हां वृद्धि कर सकता है।

गर्भवती माता जैसा खाती हैं, पीती है सोचती, देखती व सुनती है– उन सब का प्रभाव माता के गर्भस्थ बच्चे पर पड़ता हैं। वास्तव में यही समय मानव के निर्माण में महत्त्वपूर्ण समय होता है जो मां के आचरण पर ही निर्भर करता हैं।

जन्म लेने के पश्चात पांच वर्ष की आयु तक ही मां वास्तव में बालक की गुरु होती है– ये पांच वर्ष भी निर्माण की दृष्टि से बड़े ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। बालक कैसे–बैठे, उठे, चले आचरण करें, यह सब माता पर निर्भर करता हैं। यदि माता सुशिक्षित है तो वह इन पांच वर्षों में ही बालक को सुपथ पर चला देती हैं। इस आयु में माता के अतिरिक्त बालक का निर्माण कोई नहीं कर सकता। माता के ह्रदय में बालक के लिये अगाध प्रेम होता हैं। बालक काला, कुरुप, अपंग, कैसा भी क्यों न हो, माता के ह्रदय में उसके लिये प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। आज कल जो माता–पिता इस आयु में बालक को नौकर घर के कर्मचारियों आदि के हवाले करके स्वयं अन्य कामों में लगे रहते हैं या स्वयं सैर–सपाटे करते–फिरते हैं वे बालक का जीवन ही बिगाड़ देते हैं वैदिक–धर्म में माता का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य ''सन्तान का निर्माण'' ही माना हैं। ऐसा करने में ही उसका अपना और राष्ट्र दोनों का ही कल्याण होता हैं।

वैदिक–धर्म ने मानव को मानव बनाने का आधार सोलह संस्कार को करने का विधान बताया हैं– जो गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त किये जाते हैं। जो मनुष्य की सम्पूर्ण आयु में फैले हुये। ये संस्कार ही मानव को मानव बनाने में सहायक होते हैं। जैसे भी संस्कार मिलते हैं, वैसे ही विचार और कर्म बन जाते हैं,– वास्तव में अच्छे–बुरे संस्कारों की उपज हीं मानव का व्यक्तित्व होता हैं। संस्कार हीन व्यक्ति बेपैन्दी का लोटा हैं– जो इधर–उधर लुढकता रहता हैं, परन्तु एक संस्कारी व्यक्ति की दिशा व कर्म–पूर्व निश्चित होते हैं, और देश काल परिस्थिति से उत्पन्न हवा के झोके उसे पथ–भ्रष्ट नहीं कर पाते। इसीलिये हम समझते हैं कि बालक अबोध होता हैं। विचारकों का मानना हैं कि जो कुछ अच्छा या बुरा माता–पिता करते हैं, उसका प्रभाव बालक के मन–मस्तिष्क पर पड़ता है। हमें बड़ी सावधानी से बालक को शिक्षा देनी चाहिये, ताकि वह बड़ा होकर–चरित्रवान– सदाचारी, नागरिक बन सकें। अच्छा हो, यदि छोटे बालकों के सामने हम ऐसा व्यवहार न करें जिसके फलस्वरूप उसके मन में बुरें संस्कार उत्पन्न हो? संस्कारों का प्रभाव बहुत प्रबल होता है। यदि ध्यान न दिया जाये तो एक ही कुसंस्कार हमारे पतन का कारण बन सकता हैं। आज संसार में इतनी घृणा, ईर्ष्या, और हिंसा क्यों है? इसका मूल कारण संस्कार है। मनुष्य अच्छे–बुरे मार्ग की ओर प्रवृत्त संस्कारों से ही होता हैं। महाभारत का उदाहरण हमारे सन्मुख है :–

महाभारत के युद्ध को रोकने के लिये– योगेश्वर श्री कृष्ण ने हर सम्भव प्रयत्न किये, दुर्योधन से मिले, बड़ा समझाया, परन्तु कृष्ण की एक बात भी दुर्योधन ने नहीं मानी, धर्म का उपदेश देकर जब कृष्ण दुर्योधन को समझाते हैं तो दुर्योधन कृष्ण को सम्बोधित करते हुये कहता है कि–

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति।
जानाम्य धर्मं न च मे निवृत्ति।।
के नाऽपि देवेन हृदि संस्थितेने।
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

महाराज ! मैं धर्म को अच्छी तरह से जानता हूँ कि धर्म क्या है परन्तु मेरी धर्म में प्रवृत्ति नहीं है और अधर्म को भी मैं अच्छी तरह से समझता हूँ कि? अधर्म क्या है, जिस पर चलने से मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। परन्तु उससे मेरी निवृत्ति नहीं है– क्योंकि मेरे ह्रदय में ऐसे संस्कार हैं– ''यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'' जिधर वह संस्कार मुझे नियुक्त करते (प्रेरित करते है) उधर मुझे झुकना पड़ता है, मैं क्या करूँ, इसमें मेरा दोष नहीं यह सब संस्कारों की बात है। इसलिये मनुष्य जीवन में जो कुछ भला–बुरा करता हैं. अथवा प्रेरित होता हैं। वह सब संस्कारों के कारण ही होता है इसलिये मनुष्य को संस्कारों के महत्त्व को समझते हुयें, अपने अमूल्य मानव जीवन को कल्याण कारी मार्ग पर ले जाता हुआ इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख को प्राप्त करे।

हमारे ऋषि–महर्षियों तथा मनीषियों ने संस्कारों के प्रति सचेत रहने को कहा हैं। मानव हर वक्त देखे कि– वह क्या सोच रहा हैं? जैसे हमारी सोच–विचार होगी, वैसा ही हमारा भाग्य का निर्माण होगा, हमें प्रयत्न करना है कि– हमारे संस्कार अच्छे–उत्तम हों, ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल हों। इतिहास बताता है कि अनेकों महापुरुष अपने माता–पिता गुरुजनों की कृपा से ही जीवन में सफल हुये हैं।

भारत के वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जी ने अपने जीवन के सम्बन्ध में कहा हैं कि ''हर बालक एक विशेष, आर्थिक, सामाजिक, और भावनात्मक परिवेश में कुछ वंशानुगत गुणों के साथ जन्म लेता है। फिर संस्कारों के अनुरूप उसे ढाला जाता है। मुझे अपने पिता जी से विरासत के रूप में ईमानदारी और आत्मानुशासन मिला तथा माता से ईश्वर में विश्वास और करुणा का भाव, यहीं गुण मेरे तीनों भाई–बहनों को भी विरासत में मिले, बचपन में मेरे तीन पक्के दोस्त थे– रामानन्द शास्त्री, अरविन्दन और शिव प्रकाशन ये तीनों ही ब्राह्मण परिवारों से थे। रामानन्द शास्त्री तो रामेश्वरम् मन्दिर के सबसे बड़े पुजारी लक्ष्मण शास्त्री का बेटा था। अलग–अलग धर्म, पालन–पोषण, पढ़ाई–लिखाई को लेकर हममें से किसी भी बालक ने कभी भी आपस में कोई भेदभाव महसूस नहीं किया। जब मैं रामेश्वरम् के प्राईमरी स्कूल में पांचवीं कक्षा में था, तब एक दिन एक नये शिक्षक हमारी कक्षा में आये, मैं टोपी पहना करता था, कक्षा में मैं हमेशा आगे की पंक्ति में जनेऊ पहने रामानन्द शास्त्री के साथ बैठा करता था। नये शिक्षक को एक हिन्दू लड़के का मुसलमान लड़के के साथ बैठना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे उठाकर पीछे वाली बैंच पर चले जाने को कहा, मुझे बहुत बुरा लगा, रामानन्द शास्त्री को भी यह बहुत खला। स्कूल की छुट्टी होने पर हम घर गयें, और सारी घटना अपने घर वालों को बताई। यह सुनकर लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक को बुलाया और कहा कि उसे निर्दोष बालकों के दिमाग में इस तरह सामाजिक असमानता एवं साम्प्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिये। हम सब भी वहां मौजूद थे। लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक से साफ–साफ कह दिया कि– या तो वह क्षमा मांगे या फिर स्कूल छोड़कर यहां से चला जाये। उस शिक्षक ने अपने किये व्यवहार पर न सिर्फ दुःख व्यक्त किया–बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्म निरपेक्षता में उनके विश्वास से उस नौजवान शिक्षक में अन्ततः बदलाव आ गया''। यह घटना हैं जो हमें उत्तम संस्कारों की ओर प्रेरित करती हैं। यह किसको पता था कि यह होनहार बालक अब्दुल कलाम एक दिन महान वैज्ञानिक एवं भारत का राष्ट्रपति बनेगा। ऐसे ही उत्तम संस्कार डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बाबू, सर्वपल्ली राधा कृष्णन्, शंकर दयाल शर्मा, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाषचन्द्र बोस, पं० जवाहर लाल नेहरू स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि अनेकों इस आर्यावर्त देश में दिव्य आत्मायें हुई जिन्होंने उत्तम संस्कारों के द्वारा राष्ट्र निर्माण में महान योगदान दिया।

हमें भी उनके विचारों को अपना कर आगे बढ़ना हैं और वैयक्तिक, परिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीयता को ऊँचा उठाना हैं। यह शिक्षा एवं संस्कारों के द्वारा ही सम्भव हैं। महापुरुषों का जीवन ही हमारा मार्ग दर्शन कर सकता हैं। हमारे मन का अन्धकार उनकी ज्ञानरूपी ज्योति से दूर हो सकता हैं। शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन जरूरी हैं। हमें नैतिक मूल्यों पर बल देना होगा। भारत के समस्त विद्यालयों में नैतिक–धर्मशिक्षा मुख्य विषय के रूप में अवश्य ही होना चाहिये, सभी मत–मतान्तरों के मूल सिद्धान्त एक जैसे ही हैं। उन पर पहले शिक्षक को चलना हैं। शिक्षक जो करता है विद्यार्थी भी वैसा ही करता हैं। अपने बालकों को सिनेमा और टी०वी० के उन कार्यक्रमों से दूर रखना चाहिये– जिनको देखने से उनके चरित्र बिगड़ सकते हैं। ''धर्मो रक्षति रक्षितः'' यह सत्य है कि इस धर्म पारायण देश में अनादि काल से संस्कारों की महत्ता उजागर की गई हैं। हमारे ऋषि महर्षि आदि ग्रन्थ वेदों के द्वारा सदैव ही यह उपदेश देते रहे है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जितने संस्कार–कर्त्तव्य हैं उन्हें अपने जीवन का आधार बनाना चाहिये। हमारे पूर्व आचार्यों ने मल विक्षेप और आवरण से छुटकारा पाने के कई साधन बताये है– पर उनका आधार–भूत सर्वोत्तम उपाय यही है कि हमारी शिक्षा–दीक्षा ठीक प्रकार से हो, और हमारा घर परिवार उत्तम संस्कारों से सम्पन्न हो। संस्कारों का अनुपालन मानव–जीवन के अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में परम सहायक होते हैं। अधिक जानकारी के लिये हमें १६वीं शताब्दि के महान क्रान्ति–कारी, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द कृत ''संस्कार–विधि'' को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिये मानव–निर्माण में इन सोलह संस्कारों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है।

आर्यो ! हम मानव निर्माण कर आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति में सहायक बनें।

–वेद प्रचार अधिष्ठाता-पानीपत
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
हरियाणा/दिल्ली

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

भारतीय नारी की अस्मिता

— पं. विद्यानिवास मिश्र

आज के जमाने में स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में यह बात करना कि भारत में नारी के रूप में जन्म लेना नर—रूप में भी जन्म लेने से अधिक पुण्य फल है, बहुत अटपटा लगेगा। एक ओर पश्चिमी नारी—स्वाधीनता की आँधी, दूसरी ओर अपने देश में नारी की भोग्य संपदा के रूप में अवधारणा और इन सबके ऊपर मनुष्य मात्र का लोभ, भय और ईर्ष्या से अमानुषीकरण इस सबके बीच 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' दंभसूचक वाक्य लगता है।

पर भारतीय मन केवल पोथीवाला मन तो है नहीं। पोथियों की राहें तो बड़ी उलझी हुई हैं। कब किस चौराहे पर आप गलत मोड़ पकड़ लेंगे, कहा नहीं जा सकता। जिस शरत् बाबू के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने सतीत्व के आदर्श को एकनिष्ठ प्यार की साधना से छोटा कर दिया, उन्हीं की सृष्टि अन्नदा जीजी है, जो सैकड़ों इंद्रनाथों के मन पर देवी की भास्वर मूर्ति के रूप में छाई हुई है। अन्नदा जीजी से बड़ी सती की कल्पना कोई कैसे कर सकता है। दूसरी ओर, शरत् बाबू का आक्रोश कि ' न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति यह मनु का वाक्य हिन्दू समाज का अभिशाप है, 'अपनी जगह पर अलग तीखी चोट करता है।

पर पोथी की बात छोड़िये। भारतीय नारी 'नरी' नहीं, नारी है। वह नर की वृद्धि है। शास्त्र की बात छोड़ दीजिए, भारतीय लोक—विश्वास में जिसके कन्या नहीं होती है, वह दूसरे की कन्या का कन्यादान करके तरना चाहता है। कन्या दो कुलों को तारती है, पुत्र केवल एक कुल को। अकेली बेटी का बाप होने के कारण कन्या पर मेरी ममता शायद कुछ अधिक हो, अनेक कन्याओं वाले लोग कन्या का जन्म अभिशाप मानते हैं, मानें, पर मुझे बराबर विवाह के एक गीत की पहली कड़ी याद आती है —

'काहे बिन सून अँगनवा ए बाबा
काहे बिन सून लखराँव
काहे बिन सून दुअरवा ए बाबा
काहे बिन पोखरा तोहार!'
'तुहरे बिन सून अँगनवा ए बेटी
कोइलारे बिन लखराँव
पूत बिन दुअरवा ए बेटी
हंसा बिन पोखरा हमार!'

कन्या पिता से पूछती है — पिता जी, किसके बिना आँगन सूना हो जाता है, किसके बिना आमों का बाग, किसके बिना दरवाजा सूना लगता है, किसके बिना तुम्हारा पोखर? पिता उत्तर देते हैं — बेटी, तुम्हारे बिना आँगन सूना हो जायेगा, कोयल के बिना आमों का बाग, पुत्र के बिना दरवाजा सूना लगता है और हंस अर्थात् दामाद के बिना मेरा पोखर। और मैं बराबर अनुभव करता हूँ, हजार—हजार लड़कियाँ हजार—हजार बागों में कुहक रही हैं, हजार—हजार बाग सूने हो रहे हैं, हजार—हजार आँगन रो रहे हैं।

मेरी लड़की मिनी अब भी आती—जाती है, पर जो लड़की सत्रह वर्षों तक मेरे घर—मन के आँगन की गौरैया बनी निर्भय फुदकती रही, वही लड़की कहती है — 'बाबूजी, आप मुझे तो पूछते नहीं, अपनी धेवती को ही पूछते हैं। इसने मेरा अधिकार छीन लिया।' अपनी ही बिटिया से इस तरह वह माख करती है तो लगता है, वह फिर छोटी हो गई है; पर साथ ही उसके लिए मोह—छोह मेरी धेवती आमोदिनी के मोह—छोह में रूपांतरित हो गया है। मिनी माँ हो गई है, आमोदिनी से लड़ती है, पर उसे छोड़कर अपनी ससुराल जाने लगती है तो एकाएक बड़ी हो जाती है, उसकी आँखें अँसुआ जाती हैं। मैं हिसाब लगाने बैठता हूँ तो भारतीय नारी में हजार रिश्तों के केन्द्र समाहित दीखते हैं, वह सहस्र दलकमल दीखती है। उसकी जड़ एक अलग जमीन में धँसी रहती है, उसका नाल एक अव्यक्त प्यार में लहराता रहता है, जिसे हिन्दुस्तानी समाज में मुखरित करना शील के प्रतिकूल माना जाता है।

उसकी पुरइन उस जल के ऊपर असंपृक्त पसरी रहती है। वह रस लेती रहती है— अपने मैके से, वाणी की तरह, लक्ष्मी की तरह लहराती रहती है। अपनी ससुराल में। उसके सहस्र दल सहस्र शोभा की किरण बनकर सहस्र दिशाओं को प्रकाशित करते रहते हैं — किसी की ननद है, किसी की भाभी, किसी की जेठानी, किसी की देवरानी, किसी की दीदी, किसी की लाड़ली, किसी की पतोहू, किसी की अनुज—वधू, किसी की चाची, किसी की मौसी, किसी की बुआ — इन सहस्र सम्बन्धों से एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है, तभी उसके भीतर पराग भरता है, उस पराग के कण—कण में नई रस—सृष्टि के बीज पड़ते हैं। भारतीय संस्कृति उन पराग कणों में मधुपावली बनकर बीज मंत्र पढ़ती है — सम्पूर्ण उत्सर्ग के, सम्पूर्ण प्यार के, सम्पूर्ण शक्ति के।

नर के शरीर में देवता का निवास तो होता है और नर—शरीर देव—दुर्लभ भी होता है, क्योंकि नर—शरीर से देवता की साधना की जा सकती है, परन्तु नर का शरीर देवता नहीं होता, यह नारी का शरीर है, जो देवता का साक्षात् विग्रह है। 'स्त्रियः समस्तास्तव देवि भेदाः' (दुर्गा सप्तशती) के द्वारा यही दुहराया गया है। स्त्री की प्रत्येक भंगिमा में देवी का कोई न कोई भाव, कोई न कोई सौंदर्य (कोमल हो या कठोर) रूपायित रहता है। नारी का शरीर भोग्य नहीं है, वस्तु नहीं है, वह शक्ति का प्रस्फुरण है। शक्ति के कई स्तर होते हैं, वह जिलाती है, मारती है, सुलाती है, जगाती है, हंसाती है, रुलाती है, दुलराती है, कोसती है, पोसती है, हर एक दशा में नर के चैतन्य को कसौटी पर कसती रहती है।

निरे यौन आकर्षण के केन्द्र में रहने वाली नारी चुक जाती है, चुक जाय; निरी बांधवी विरस हो जाती है, हो जाये; निरी कन्या पराई हो जाती है, हो जाये; निरी माँ बोझ हो जाती है, हो जाये; पर भार बनकर आती है और तीन दिन रहना भी उसका दुस्सह हो जाता है। पर गाँव का आदमी हूँ, माँ के हाथ की रसोई अमृत लगती है।

संयुक्त परिवार शहरीकरण और उद्योगीकरण से भले ही टूट जाये, पर हिन्दुस्तान के सनातन हिन्दुस्तानी मन के पारिवारिक बोध में टूटन नहीं आयेगी। हम कितने भी शहरी क्यों न हो जायें, अपने पड़ोसी के बच्चे के लिए 'हाइ जैक', 'हाइ गिल' नहीं है; चाचा हैं, चाची हैं। मित्र की पत्नी मित्र उम्र में छोटे हुए तो बहू है, बड़े हुए तो भाभी है, सुंदरी नहीं है। इसका एकमात्र कारण भारतीय नारी की गरिमापूर्ण अस्मिता है, जो केवल 'मैं हूँ' नहीं सोचती, 'मुझमें इतने भाव हैं, मैं उन भावों की परिपूर्णता हूँ' — इतनी दूर तक सोचती है। इस अस्मिता का जितना अधिक प्रस्फुटन होगा उतना ही कम अवसर होगा कुंठा का, टूटन का, एकाकीपन का, यौन स्वच्छंदता में पलायन का, जवानी के लिए बिसूरने का, जवान बने रहने के लिए दयनीय साधना का और अपने को मात्र 'नरी' मानने की विवशता का।

हिन्दुस्तान में स्त्री—पुरुष के समान स्तरीय सम्बन्ध भी इतने विविध हैं, और उनके खट—मिट्ठे आस्वाद इतने अलग—अलग और प्रत्येक अपने में अद्वितीय है कि दूसरे समाज में उतने खुले और उतने सहज सम्बन्ध दिखेंगे ही नहीं। श्रीकृष्ण और कृष्णा (द्रौपदी) का सख्य इसका एक अप्रतिम उदाहरण है। 'उत्तररामचरित' में वन—देवता वासंती राम से जो मानवीय रिश्ता जोड़ती है, उसके आधार पर राम को एक ओर तो बड़ी से बड़ी बात सुनाती है, दूसरी ओर राम की दशा से द्रवित होकर सीता को ही उलाहना देने लगती है, उस स्नेह का कहीं जोड़ नहीं मिलेगा।

हिन्दुस्तान के रिश्ते व्यक्ति और व्यक्ति के बीच नहीं होते, एक सम्बन्ध चक्र और दूसरे सम्बन्ध चक्र के बीच होते हैं। दो जड़ सत्ताओं के बीच नहीं होते, दो गति विवर्तों के बीच में होते हैं। साहचर्य सम्बन्ध का एक चक्र है; मैं हूँ, मेरे भाई हैं, मेरे मित्र हैं, अब मेरे मित्र की पत्नी मेरी भ्रातृ पत्नी की तरह होगी, मेरे मित्र का साला मेरा साला हो जायेगा। गतिशीलताओं के जुड़ने की यह प्रक्रिया एकाध रिश्तों की कमी की पूर्ति करती रहती है। एकाध रिश्तों के अभाव भरती रहती है। भारतीय नारी अलग—अलग क्षणों में माया, मोहमयी रजनी, काली कंकाली, दयामयी, रागमयी, लालसामयी लक्ष्मी और सात्विक उल्लासमयी, प्रकाशमयी, अर्पणमयी सरस्वती दीखती है; पर समग्र रूप में वह सृष्टि है, सृष्टि की आकांक्षा है, सृष्टि की साधना है।

स्वामी विवेकानन्द के अमरीका में दिए गए व्याख्यान के संदर्भ से अपनी बात समेटना चाहूँगा। उन्होंने कहा था कि भारतीय नारी इसी माने में विशिष्ट है कि वह संतान के लिए तप करती है; प्रजनन कामोदिष्ट है, धर्मोदिष्ट है, धर्म से भी ऊपर जाकर मोक्ष के लिए उदिष्ट है; माता होकर ही वह मुक्त होती है, क्योंकि सृष्टि ही मुक्ति है और सृष्टि भी वह जो तप से हुई हो, ऋत और सत्य के रूप में हुई हो। कितनी मनौती मानती है, कितने देवी—देवताओं का ध्यान करती है, कितने व्रत—अनुष्ठान करती है और तब उसके राम जन्म लेते हैं — उसको उसके अहंकार से उद्धृत करने वाले, उसकी कोख से सीता जन्म लेती है, दशरथ के कुल को भी तारने वाली। जनक के कुल को भी तारने वाली भारतीय नारी मुक्ति के लिए आंदोलन नहीं करतीं, मुक्ति की, स्वाधीनता की, स्व—नियंत्रण की, स्वोत्सर्ग की साकार मूर्ति के रूप में अपने को रचकर उच्च स्तर की स्वाधीनता का प्रेरणास्रोत बनती है।

स्वर्गीय पं. विद्यानिवास मिश्र जी एक सजग, बौद्धिक, निर्भीक कलम के धनी व्यक्ति हैं, उन्होंने अपने लेखन में भारतीय जीवन दृष्टि को बड़े साहस के साथ उभारने का प्रयास किया है। मिश्र जी के लेखन में एक विशेष प्रकार की व्यापकता और वस्तुनिष्ठता है जो पाठक को सोचने के लिए उद्वेलित करती है। प्रस्तुत लेख "भारतीय नारी की अस्मिता" में उन्होंने नारी के विशेष गुणों का वर्णन करते हुए भारतीय नारी को विशिष्ट बनाया है। —सम्पादक

ओ३म् ध्वज फहराना है

जो अब तक सोये हुए हैं उन्हें अब फिर से जगाना है,
सांसारिक चक्रव्यूहों से निकलकर अब हमें ईश्वर का ध्यान लगाना है।
ऐसा जुड़ाव जुड़े ईश्वर में हर परेशानी हल हो जाये,
सफलता की चाह होने पर जीवन हमारा सफल हो जाये।
जो अनजान है अभी वैदिक शिक्षाओं से,
सरलतम सन्मार्ग उन्हें अब दिखाना है।
वैदिक संस्कारों को जीवन में अपनाकर,
भव सागर पार अब कर जाना है।
'ओ३म्' शब्द अपने आप में सम्पूर्णता का सार है,
सुसंस्कार, सुविचार, सुव्यवहार से हो जाता जीवन का उद्धार है।
हम सभी को अपने मन में यही जोश अब जगाना है।
ओ३म् ध्वज फहराना है, ओ३म् ध्वज फहराना है।।1।।

सांसारिक जीवन बड़ा कठिन है ओ३म् नाम ही इसे सरल बनायेगा,
निभाने को हम हर किरदार निभा रहे हैं, अच्छा किरदार ओ३म् नाम निभायेगा।
ओ३म् अपने आप में सर्वशक्तिमान है,
हम सभी का गौरव तथा हम सभी की शान है।
ओ३म् नाम सांसारिक दुःखों में शीतलता का अनुभव हमें कराता है,
पग—पग पर हमेशा हमारे साथ होने का एहसास हमें दिलाता है।
ओ३म् ध्वज एवं ओ३म् ध्वनि सभी जगह गुंजाना है,
वैदिक संस्कृति व संस्कारों से प्राप्त करते हम सभी सम्मान हैं।
ओ३म् की महिमा को वैदिक गीत संगीत के माध्यम से जन—मानस में पहुंचाना है।
ओ३म् ध्वज फहराना है, ओ३म् ध्वज फहराना है।।2।।

— दीपक कुमार छिल्लर
म. नं.—1022, ग्राम सभा कालोनी, सरदार पटेल झील के पास,
पूठकलां, दिल्ली—86, मो.:—9990422051

प्रतिष्ठित आर्य श्रेष्ठी, प्रसिद्ध दानवीर आर्य समाज के भामाशाह डॉलर फाउण्डेशन के अध्यक्ष सेठ दीनदयाल गुप्त जी के पूज्य पिता स्व. सेठ बालूराम गुप्त की पुण्यतिथि के अवसर पर उनके पैतृक गांव मानहेरू, जिला–भिवानी, हरियाणा में यज्ञ, वेद प्रचार एवं कुश्तियों का विशेष आयोजन हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी का रहा मुख्य सान्निध्य

आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ की गरिमामयि उपस्थिति एवं श्री कुलदीप आर्य भास्कर की भजन मण्डली द्वारा किया गया वेद प्रचार

प्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी सेठ दीनदयाल गुप्त किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वे लम्बे समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का नेतृत्व करते रहे और कलकत्ता में रहकर उन्होंने 'डॉलर अंडरगारमेंट' के व्यवसाय के माध्यम से देश में विशेष ख्याति अर्जित की। ग्राम मानहेरू, जिला–भिवानी, हरियाणा में जन्में सेठ दीनदयाल गुप्त सन् 1907 से कलकत्ते को अपने व्यवसाय का केन्द्र बनाकर निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हैं। आचार्य रमाकान्त जी के प्रवचनों से प्रेरित और प्रभावित होकर वे आर्य समाज से जुड़े और उसके पश्चात् महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के दीवाने हो गये। वे अपनी पवित्र कमाई में से करोड़ों रुपये गुरुकुलों, गौशालाओं, वेद प्रचार, विद्वानों, भजनोपदेशकों, संन्यासियों, निर्धन छात्र–छात्राओं आदि की सहायतार्थ दान देकर पुण्य कमा रहे हैं। यदि उन्हें आर्य समाज का भामाशाह कहा जाये तो अतिश्योंक्ति नहीं होगी।

अपने पूज्य पिता स्व. सेठ बालूराम गुप्त की पुण्य तिथि के अवसर पर प्रतिवर्ष वे अपने पैतृक गांव–मानहेरू में बनी वाला बाबा के स्थान पर विशाल आयोजन करते हैं। जिसमें विशेष यज्ञ, वेद प्रचार, ऋषि लंगर (भंडारा) एवं कुश्ती का विशाल दंगल मुख्य हैं। कुश्ती लड़ने वाले सभी पहलवानों को वे अपनी ओर से ईनाम देकर सम्मानित करते हैं। यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित होता है और वे स्वयं कलकत्ता से अपने गांव आकर कम से कम 10–15 दिन का समय लगाते हैं। इस वर्ष 17 अप्रैल, 2024 राम नवमी के दिन सेठ दीनदयाल गुप्त जी ने अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में यह कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें उन्होंने प्रतिष्ठित आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ एवं युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर को मण्डली सहित आमंत्रित किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के उपरान्त सैकड़ों लोगों को अपने व्यवसान छोड़ने की प्रेरणा देते हुए उनसे आग्रह किया कि वे अपने जीवन से व्यसनों को निकालने का संकल्प लें। स्वामी जी ने यज्ञ के सामाजिक पक्ष को समझाते हुए लोगों को प्रेरणा दी कि वे अपने घरों में अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ करना प्रारम्भ करें। अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार दें और वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए कार्य करें। स्वामी आर्यवेश जी ने सेठ दीनदयाल गुप्त जी के समाज उपकारक कार्य की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

यज्ञ के उपरान्त हजारों लोगों ने ऋषि लंगर में भोजन ग्रहण किया और उसके पश्चात् कुश्ती का दंगल प्रारम्भ हुआ। कुश्ती में भाग लेने वाले सभी पहलवानों एवं कोच आदि को सेठ दीनदयाल जी ने लाखों रुपये की राशि इनाम स्वरूप बांटी।

इस अवसर पर सेठ दीनदयाल गुप्त जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रचार की अब अत्यन्त आवश्यकता है। उन्होंने आग्रह किया कि शास्त्रार्थों का कार्य पुनः प्रारम्भ करना चाहिए और वैदिक सिद्धान्तों की स्थापना जितनी आसानी से शास्त्रार्थों के द्वारा की जा सकती है उतनी अन्य तरीके से सम्भव नहीं है। सेठ जी ने स्वामी आर्यवेश जी तथा उपदेशकों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा उन्हें भी सम्मानित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

स्व. महात्मा फग्गूराम एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी की स्मृति में दिनांक 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2024 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दो दिवसीय यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की रही अध्यक्षता

गत् 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2024 को प्रसिद्ध समाजसेवी सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. श्री बलराज आर्य (सोनी) के सौजन्य एवं पुरुषार्थ से उनके पूज्य पिता स्व. महात्मा फग्गूराम एवं उनकी पूज्या माता श्रीमती पार्वती देवी जी की स्मृति में दो दिवसीय यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में उत्साह के साथ आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से दोनों दिन उपस्थित रहे और कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले सैकड़ों आर्यजनों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम की व्यवस्था का दायित्व बहन प्रवेश आर्या ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। उनके साथ आर्य साधिका मण्डल टिटौली की सभी सदस्याओं ने विशेष सहयोग किया। कार्यक्रम में स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम आर्या जी, स्वामी मुक्तिवेश जी आदि के भी उपदेश हुए।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य विशेष रूप से अपनी पार्टी के साथ पधारे। दोनों दिन उनका कार्यक्रम आर्य समाज खिडवाली एवं आर्य समाज सांघी में भी आयोजित कराया गया जिसमें भारी संख्या में ग्रामीण जनता ने भाग लिया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का सम्पूर्ण व्यय श्री बलराज आर्य ने उठाया और दोनों दिन कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले सैकड़ों स्त्री–पुरुषों को जहां प्रसाद वितरण किया गया वहीं उन्हें सम्मानित भी किया गया। सम्मानित होने वाले सभी स्त्री–पुरुषों को शॉल भेंट किया गया। दोनों दिन के यज्ञ को स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में संचालित किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने अपनी आहुतियां प्रदान की।

श्री बलराज आर्य प्रतिवर्ष अपने पूज्य पिता जी एवं माता जी की स्मृति में वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित करते हैं और उच्चकोटि के वैदिक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों को आमंत्रित करके प्रचार भी करवाते हैं। उनका यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। सभी को उनके इस कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य समाज गांधी कालोनी, गाजियाबाद में वैशाखी के अवसर पर 13 व 14 अप्रैल, 2024 को मनाया गया वार्षिकोत्सव

स्वामी आर्यवेश जी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

श्री वेद व्यास जी ने किया कार्यक्रम का संयोजन

आर्य समाज गांधी कालोनी, गाजियाबाद में 13 व 14 अप्रैल, 2024 को वैशाखी पर्व के अवसर पर वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। उत्सव में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षामंत्री श्री बालेश्वर त्यागी, वेद विदुषी डॉ. सरोज दीक्षा, श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे।

इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने जलियांवाला बाग काण्ड में हुए नर–संहार का चित्रण करते हुए बताया कि किस प्रकार अंग्रेज सरकार ने निहत्थी जनता को गोलियों से भून डाला था और पूरे देश में भय एवं आतंक का वातावरण बना दिया था, किन्तु अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने खौफ के उस सन्नाटे को छोड़ते हुए तत्कालीन कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन कराकर अंग्रेजों को चुनौती दी थी।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में जलियांवाला बाग काण्ड प्रायः देश का बच्चा–बच्चा जानता है अतः हमें अपने राष्ट्र की आजादी को अक्षुण्य बनाये रखने के

शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान एवं हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री, आर्य नेता चौधरी हरि सिंह सैनी जी की स्मृति में विशाल श्रद्धांजलि सभा

21 अप्रैल, 2024 (रविवार) को सी.ए.वी. स्कूल हिसार में हुई आयोजित

प्रतिष्ठित आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी एवं अनेक नेताओं ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान एवं हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री एवं प्रसिद्ध आर्य नेता चौ. हरि सिंह सैनी की 89 वर्ष की आयु में गत् 10 अप्रैल, 2024 को हो गया। उनकी स्मृति में 21 अप्रैल, 2024 रविवार को सी.ए.वी. हाई स्कूल, हिसार के प्रांगण में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा का मंच संचालन दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य डॉ. प्रमोद कुमार ने किया। श्रद्धांजलि सभा को आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता एवं प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी, युवा संन्यासी प्रखर वक्ता स्वामी सच्चिदानन्द जी, आर्य भजनोपदेशिका बहन संगीता आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष श्री दलवीर सिंह आर्य आदि के अतिरिक्त पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह, वर्तमान हरियाणा सरकार में मंत्री चौ. रणजती सिंह, पूर्व सांसद श्री नवीन जिन्दल, युवा नेता श्री सूबे सिंह आर्य मुकलान, श्री रणधीर सिंह पनिहार, सरदार हवा सिंह सैनी रोहतक आदि ने भी स्वर्गीय चौधरी साहब को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि सभा में वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री राम कुमार आर्य, आचार्य रामस्वरूप शास्त्री गुरुकुल आर्यनगर, श्री महावीर सिंह रिटायर्ड तहसीलदार, आचार्य देवदत्त शास्त्री, आर्य समाज हिसार के कोषाध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश आर्य एवं मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार मिगलानी, दयानन्द कॉलेज हिसार के प्रिंसिपल डॉ. विक्रमजीत सिंह, श्री सीताराम आर्य आर्यनगर हिसार, श्री महेन्द्र सिंह आर्य आर्यनगर, डॉ. राजपाल आर्य एवं श्री सत्यपाल सरपंच जाजवान जीन्द, श्री बलराज मलिक पत्रकार, श्री मनीराम गोयल, श्री महावीर सिंह सैनी, श्री हरि सिंह सैनी, श्री मुकेश सैनी, श्री सुभाष सैनी, श्री राधेश्याम आर्य, आर्य प्रादेशिक सभा के उपमंत्री श्री सत्यपाल आर्य, श्री बलवन्त सिंह आर्य न्यांणा, महात्मा आजाद मुनि जी, श्री जयवीर सोनी, श्री नितीन कुमार सैनी आदि भी श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. चौ. हरि सिंह सैनी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि लम्बे समय तक सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से कार्य करने के बावजूद चौधरी हरि सिंह जी एक निष्कलंक एवं वेदाग जीवन बिताकर गये हैं। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा देने वाला है। अपने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव एवं संघर्ष देखने वाले चौधरी हरि सिंह जी कभी निराश एवं हताश नहीं हुए बल्कि हर विपत्ति का सामना उन्होंने अपने मजबूत आत्मबल के साथ किया। वे आर्य समाज के और ऋर्षि दयानन्द जी के समर्पित कार्यकर्ता एवं नेता थे। बड़ी–बड़ी शोभा यात्राओं में झूम–झूमकर महर्षि दयानन्द जी के गीत गाया करते और अत्यन्त उत्साह एवं ऊर्जा के साथ भाग लेते थे। आर्य समाज नागौरी गेट को उन्होंने अपने पुरुषार्थ से जो गरिमा एवं प्रतिष्ठा दिलाई वह इतिहास के अन्दर सदैव याद की जायेगी। आज देश में सबसे अधिक प्रतिष्ठित एवं चर्चित आर्य समाजों में आर्य समाज नागौरी गेट का नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। अनेक गुरुकुलों, गौशालाओं एवं शिथिल पड़ी आर्य समाजों में आर्थिक सहयोग देकर आर्य समाज नागौरी गेट ने अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किये हैं। लम्बे समय तक वैतनिक भजनोपदेशक रखकर वेद प्रचार के कार्य को समाज में आगे बढ़ाया है। आर्य समाज के भजनोपदेशकों एवं विद्वानों को समय–समय पर आर्य समाज की ओर से विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता रहा है। इन सभी गतिविधियों के पीछे चौ. हरि सिंह जी की मुख्य भूमिका रही। उन्होंने अपने सभी सहयोगियों को साथ लेकर उनका विश्वास प्राप्त करके सभी कार्य सम्पन्न किये। अपने पैतृक घर को पूज्या माता सावित्री बाई फूले की स्मृति में एक धर्मशाला का स्वरूप प्रदान करके समाज के लिए उन्होंने समर्पित किया जिसका लोकार्पण उन्होंने मेरे द्वारा करवाकर जो सम्मान मुझे दिया उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि मेरा उनके साथ सन् 1980 में सम्पर्क हुआ, जब हमने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से हिसार के दयानन्द कॉलेज में 1500 नवयुवकों का एक सात दिवसीय शिविर आयोजित किया था, उस शिविर का गुरुतर भार अपने कंधों पर स्व. चौ. हरि सिंह ने उठाया और हमें निश्चिन्त कर दिया। स्व. चौ. हरि सिंह सैनी जी स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में चलाये गये युवक क्रांति अभियान के एक मजबूत स्तम्भ एवं सहयोगी थे। उन्होंने हर परिस्थिति में स्वामी द्वय का साथ दिया और मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि आर्य समाज नागौरी गेट हिसार में संन्यास दीक्षा के बाद मुझे पहली सात दिन की वेद कथा करने का अवसर प्रदान किया गया जिसका श्रेय स्व. चौधरी हरि सिंह सैनी जी और आर्य समाज के तत्कालीन पुरोहित आचार्य विश्वमित्र जी को जाता है। स्वामी जी ने बताया कि स्व. चौधरी साहब जी के जीवन से सम्बन्धित सैकड़ों संस्मरण मेरे समक्ष रील की तरह घूम रहे हैं, किन्तु समयाभाव में मैं उनपर प्रकाश नहीं डाल सकता। इस अवसर पर मैं विश्व की समस्त आर्य समाजों का संचालन करने वाली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। मैं चौधरी साहब के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री देवेन्द्र सिंह सैनी जिन्हें बचपन से मैं देखकर रहा हूँ, वे अपने पिता जी के अनुव्रती बनें और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में मनोयोग से जुटें। हम उनके साथ दिलोजान से सहयोग करते रहेंगे। स्वामी जी ने स्व. चौधरी साहब की पत्नी पूज्या माता विद्यादेवी जी के प्रति भी अपनी सांत्वना प्रकट की। इसी प्रकार अन्य सभी वक्ताओं ने अपने–अपने संस्मरण और भावनाओं के द्वारा स्व. चौधरी साहब जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में हजारों लोगों की भीड़ से सहज में अनुमान लगाया जा सकता है कि वे कितने लोकप्रिय नेता थे और उन्होंने अपने कार्यों की सुगन्धि हजारों लोगों में फैला रखी थी। श्रद्धांजलि सभा में महर्षि दयानन्द जी के लघु ग्रन्थ नामक पुस्तक भी सभी को वितरित की गई। अन्त में सैकड़ों महत्त्वपूर्ण लोगों एवं संस्थाओं द्वारा भेजे गये शोक प्रस्ताव पढ़कर सुनाये गये। शोक प्रस्ताव भेजने वालों में मुख्य रूप से हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी, श्रीमती सावित्री जिन्दल, श्री कमल गुप्ता मंत्री हरियाणा सरकार, डॉ. पूनम सूरी अध्यक्ष डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी आदि के अतिरिक्त अनेक गुरुकुलों, आर्य समाजों, सामाजिक संगठनों के शोक प्रस्ताव भी सुनाये गये। रस्म पगड़ी के उपरान्त श्री देवेन्द्र सिंह सैनी तथा उनके परिवार की ओर से उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया और शांति पाठ के साथ श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई।

नव–निर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन अवसर पर बाड़ी, जिला–रायसेन (मध्य प्रदेश) में विशेष यज्ञ का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं – स्वामी आर्यवेश

ईश्वर उपासना के बिना मनुष्य जीवन अधूरा है – स्वामी ऋतस्पति

आर्य राष्ट्र का निर्माण करना हम सबका उद्देश्य होना चाहिए – आचार्य चन्द्रदेव

यज्ञशाला निर्माण का मेरा उद्देश्य पूरा हुआ – निर्भयानन्द

गत् 27 से 31 मार्च, 2024 तक कस्बा–बाड़ी, जिला–रायसेन, मध्य प्रदेश में स्वामी निर्भयानन्द सरस्वती द्वारा नव–निर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य स्वामी ऋतस्पति जी, संन्यास आश्रम गाजियाबाद के उपाध्यक्ष एवं प्रबन्धक स्वामी सूर्यवेश जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं राजार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चन्द्रदेव जी आदि के अतिरिक्त श्री विजय कुमार यादव–भोपाल, श्री धर्मवीर शास्त्री, श्री राजवीर शास्त्री, आर्य समाज टी. टी.नगर भोपाल नगर के सभी पदाधिकारी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। चार दिन तक निरन्तर कार्यक्रम चलता रहा। प्रातः एवं सायं यज्ञ तथा भजन एवं उपदेश होते रहे। स्वामी निर्भयानन्द जी एवं उनके सुपुत्र श्री अरुण साहू एवं श्री शरद साहू ने आगन्तुक अतिथियों का सम्मान एवं सुन्दर आतिथ्य प्रदान किया।

विदित हो कि हरिद्वार से होशंगाबाद की वेद प्रचार यात्रा जो कुछ वर्ष पूर्व स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में निकाली गई थी उस यात्रा के दौरान बाड़ी कस्बे से एक किलोमीटर दूर नहर के किनारे यज्ञशाला का शिलान्यास किया गया था।

उस यज्ञशाला का विधिवत निर्माण होने के उपरान्त यह कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी स्वामी आर्यवेश जी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। स्वामी जी ने श्री अरुण साहू एवं श्री शरद साहू तथा पूरे परिवार को साधुवाद देते हुए इस पुण्य कार्य के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली रहा।

सिन्धु सभ्यता द्रविड़ सभ्यता है?

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

इतिहासकारों तथा पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा आर्य तथा द्रविड़ शब्दों को नस्ल वाची मानने के साथ-साथ यह कल्पना भी की गई कि सिन्धु घाटी की सभ्यता ही द्रविड़ सभ्यता है। इसे ही मोहन जोदड़ो हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। यह कल्पना भी नस्लवाद के समान ही केवल अनुमान तथा पूवाग्रह पर आधारित थी जिससे कि द्रविड़ों को इससे सम्बन्धित मानकर उन्हें आर्यों से पृथक नस्ल का माना जाए। इस कल्पना के मूल में उत्तर तथा दक्षिण भारत में वैमनस्य तथा फूट का बीज बोना था, जो पुष्पित एवं पल्लवित होकर आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है तथा भारत का राष्ट्रीय अहित कर रहा है।

सिन्धु सभ्यता के अवशेष अब तक बलूचिस्तान से लेकर उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना दुआवा के पूर्व तक तथा हिमलय से लेकर नर्मदा नदी तक के क्षेत्र में कई सौ स्थानों पर मिल चुके हैं। इसे सिन्धु सभ्यता कहने का कारण यह है कि ये अवशेष सर्वप्रथम सिन्धु नदी की घाटी में पाये गये थे। कर्नल कनंघम को पंजाब के हड़प्पा नामक स्थान से कुछ प्राचीन अवशेषों के साथ एक मुहा भी मिली थी। इसके कई वर्षों पश्चात् राखल घा बनर्जी को सिन्ध प्राप्त में मोयाँ जो दारो (मुर्दो का टीला) से वैसे ही अवशेष मिले जैसे कि हड़प्पा में मिले थे। इस टीले की खुदाई करने पर वहाँ प्राप्त अवशेषों के आधार पर बनर्जी ने इसे आर्य सभ्यता कहा। इसके दण्ड स्वरूप उन्हें राजकीय सेवा से निकाल दिया गया। बनर्जी उस समय "Archedogical Survey of India" ds Director General Jon Marshall जान मार्शल के सहायक थे। जॉन मार्शल के सिन्धु घाटी सभ्यता को द्रविड़ों की कहा जो उनके पूर्वाग्रह पर आधारित था। इसके आधार पर वे आदिवासियों के मस्तिष्क में एक ऐसे पृथक् राष्ट्र की कल्पना भरना चाहते थे जो आर्यो से भिन्न हो।

जोधपुर विश्व विद्यालय के तात्कालिक संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा 'राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' के निर्देशक डॉ. फतेह सिंह ने सिन्धु लिपि को सर्वप्रथम सफलता पूर्वक पढ़ा। इस विषय को वे स्वयं लिखते हैं "सिन्धु मुगलों को नस्लवादी दृष्टि से अध्ययन करते हुए जब मैं निराश हो गया तो मैंने लिपियों के तुलनात्मक अध्ययन से सिन्धु लिपि को खोज निकाला।" सन् 1960 तक उन्होंने 2500 सिन्धु मुद्राएँ पढ़ती थी। इनके आधार पर अपने विचारों की प्रस्तुति करते हुए डॉ. फतेह सिंह लिखते हैं" मेरा मत बना कि सिन्धु घाटी के हड़प्पा और मोयाँ जो दारों की खुदाई में मिली यज्ञवेदियां वैदिक हैं, सिन्धु मुद्राओं पर जो लिपि है, वह पूर्व ब्राह्मी है और उनके लेखों में ओम्, उमा, मित्र, वरुण, वषट् आदि जो वैदिक शब्द मिलते हैं, उनके आधार पर इन नगरों की सभ्यता को निश्चय पूर्वक वैदिक मानना पड़ता है।"

डॉ. सिंह ने 'राजस्थान उच्च विद्या प्रतिष्ठान' की 'स्वाहा' नामक पत्रिका में ऐतिहासिक कई लेख लिखे तथा अपने अपने शोध कृति को 1968 में प्रकाशित कराया। इसके समर्थन में पद्मधर पाठक ने एक लेख 1968 में 'Hindustan Times' एक लेख 'Decipherment of Indus Scripts' नाम से लिखा था जिसे सम्पादक मण्डल के एक दक्षिण भारतीय सदस्य के प्रयास से दो महीने तक प्रकाशित नहीं होने दिया गया। पत्र के मुख्य सम्पादक वर्गीज को लिखे गये लेखक के दो पत्रों के पश्चात् ही वह लेख प्रकाशित हो सका। डॉ. फतेह सिंह को मिले व्यक्तिगत पत्रों में यह धमकी भी दी गई थी कि यदि सिन्धु सभ्यता को आर्य सभ्यता सिद्ध करने का यह स्वप्न चलता रहा तो द्रविड़ों को इसके विरूद्ध जोरदार आन्दोलन करना पड़ेगा। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विद्वान एफ. आरत्र अल्विन ने भी 6 अप्रैल 1969 को 'Hindustarn Times में एक लेख लिखकर कहा था कि डॉ. सिंह की खोज से तो आर्य तथा द्रविड़ का भेद ही मिट जायेगा तथा इसका जबरदस्त विरोध होगा। डॉ. फतेह सिंह कहते हैं "इस प्रकार की घटनाओं से मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि स्वतन्त्र भारत में भी हम पुराने साम्राज्यवादी लेखकों की परम्परा के गुलाम हैं और जब तक इससे मुक्त नहीं होते तब तक सत्य की खोज नहीं की जा सकती।"

इस प्रकार यह सिद्ध है कि सिन्धु सभ्यता को द्रविड़ सभ्यता सिद्ध करने का कार्य दक्षिण तथा उत्तरी भारत में फूट डालने के उद्देश्य से योजनाबद्ध तरीके से किया जाता रहा है। डॉ. फतेह सिंह आदि के शोध कार्यों के आधार पर अब विद्वान लोग इसे आर्य सभ्यता मानने लगे हैं। विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के पूर्व अध्यक्ष पदम् श्री डॉ. विष्णु वाकणकर मोहन जोदड़ो से प्राप्त मुद्राओं को पढ़कर इसी परिणाम पर पहुँचे हैं कि सिन्धु घाटी की लिपि भारतीय है तथा उसका मूल आर्य सभ्यता में है। उन्होंने इसे आर्येत्तर कहने का बलपूर्वक खण्डन किया है।

इसी प्रकार शरिका क्षेत्र में एस. आर. राव के निर्देशन में समुद्रतल में चल रहे सर्वेक्षणों तथा खुदाइयों में भी हड़प्पा तथा भारतीय पौराणिक विचारों की संगति प्राप्त हुई है।

इसका सबसे अकाट्य प्रमाण वह मुद्रा है जो मोहन जोदड़ों की खुदाई प्राप्त हुई है उस मुद्रा पर खुदे चित्र में एक वृक्ष पर बैठे दो पक्षी दिखलाई दे रहे हैं। इनमें से एक वृक्ष के फल खा रहा है जबकि दूसरा उसे केवल देख रहा है। यह चित्र ऋग्वेद के निम्न मन्त्र के आधार पर बनाया गया था -

द्वा सुपर्णा समुजा सखाया समानं वृक्षं परिणस्वजाते।

जमोस्यः पिप्पलं स्वाद्वन्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति। ऋ. 1/164/20

इसका अर्थ है कि एक ही प्रकृति रूपी वृक्ष पर जीव तथा परमेश्वर रूपी दो पक्षी मित्र बैठे हैं। उनमें से एक जीवात्मा प्रकृति प्रदत्त फलों का उपयोग कर रहा है जबकि परमेश्वर केवल देख रहा है। सिन्धु घाटी के सिक्कों पर वेदमन्त्र की इतनी स्पष्ट छाप होने पर भी मोहन जोदड़ों हड़प्पा संस्कृति को अनार्य द्रविड़ संस्कृति कैसे कहा जा सकता है?

डॉ. फतेह सिंह को प्राप्त कुछ सिन्धु मुद्राओं पर ऐ ऐसे वृक्ष का चित्र भी था जिसकी जड़ें आकाश की ओर तथा शाखाएँ पृथ्वी की ओर थी। इस चित्र के मूल में ऋग्वेद का यह मन्त्र है-

अवुधे राजा वरुणो वनस्योर्ध्व स्तूपं ददते पूतदक्षः।

नीचीनाः स्थुरूपरि बुध एबामस्मे अन्तर्निहिता केतवः स्युः।। ऋ. 1/24/7

भगवत्गीता में भी इस वृक्ष की चर्चा इसी रूप में की गई है। इन मुद्राओं में अधिकांश पर सूर्य तथा गौ का सिर चित्रित था। वैदिक संस्कृति सूर्य तथा गौ की पूजक रही है। कुछ सिक्कों पर सिन्धु लिपि में 'राम' लिखा था तथा साथ ही राम, सीता राम लक्ष्मण के चित्र भी थे। इन सिक्कों में सीता, लक्ष्मण तथा राम वनवासी वेश में हैं तथा वाल्मीकि रामायण से पता चलता है कि कैकयी ने एक बार वस्तुतः सीता को भी वनवासी वेश पहना दियाथा जिसे वसिष्ठ मुनि ने दूर कराया।

इतने सुस्पष्ट प्रमाण होने पर भी सिन्धु सभ्तया को अनार्य द्रविड़ सभ्यता कहना दुराग्रह एवं दुःसाहस के अतिरिक्त और क्या हो सकता है?

ऊर्ध मूल मधः शाखमश्वत्थमाहुरव्ययम्।

छदांसि यस्य पर्णानि यस्यं वेद से वेदवित्।। भग. गीता 15।1

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज गांधी कालोनी, गाजियाबाद में वैशाखी के अवसर पर 13 व 14 अप्रैल, 2024 को मनाया गया वार्षिकोत्सव

लिए संकल्प लेना चाहिए।

श्री बालेश्वर त्यागी जी ने शिक्षा में संस्कारों पर बल दिया और कहा कि शिक्षा का व्यवसायीकरण नहीं होना चाहिए बल्कि शिक्षा को मनुष्य निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण साधन मानना चाहिए।

14 अप्रैल, 2024 को प्रातः विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 100 बच्चों ने यज्ञोपवीत धारण किया। यज्ञोपवती धारण करने वाले यह बच्चे झुग्गी–झोपड़ी एवं गरीब परिवारों में रहने वाले वाले बच्चे थे। जिन्हें श्री वेद व्यास जी ने आर्य समाज से जोड़ा हुआ है। इन बच्चों में अनेक बच्चे अत्यन्त प्रतिभाशाली हैं। इन्हीं बच्चों में कईयों को यज्ञ एवं संन्ध्या कंठस्थ है और साप्ताहिक सत्संग में भी वे नियमित भाग लेते हैं। इन बच्चों की प्रतिभा देखते ही बनती है और उनके द्वारा यज्ञोपवीत देने का कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली रहा। इस सारे के सारे कार्य का श्रेय श्री वेद व्यास जी को जाता है। स्वामी आर्यवेश जी के ब्रह्मत्व में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ और उसके पश्चात् स्वामी जी के कर–कमलों से प्रतिभावान् बच्चों को पारितोषिक प्रदान किये गये। पारितोषिक में जहां उन्हें स्मृति चिन्ह दिया गया वहां धनराशि भी भेंट की गई।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए इस अवसर पर कहा कि आर्य समाज गांधी कालोनी, गाजियाबाद का यह कार्यक्रम अनोखा एवं निराला है। इससे सभी आर्य समाजों को प्रेरणा लेनी चाहिए और उन्हें अपनी आर्य समाजों में गरीब लोगों के परिवारों में जाकर उनके बच्चों को आर्य समाज से जोड़ना चाहिए, उनको उत्साहित करने के लिए समय–समय पर प्रतियोगिताएं एवं पारितोषिक आदि के द्वारा प्रेरित करना चाहिए। दो दिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। श्री वेद व्यास जी ने स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी आगन्तुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सर्वोत्तम आहार – शाकाहार

– श्री रामनिवास लखोटिया

आज भारतीय समाज में सामिष भोजन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति एक शोध और गंभीर चिन्ता का विषय है। साथ ही साथ शराब, धूम्रपान, अफीम, गाँजा, गुटखा और विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति भी समाज के सभी तबकों के लोगों में दृष्टिगोचर हो रही है, और चिन्तित कर रही है। शहरों में पश्चिमी फैशन से प्रभावित परिवारों के युवक एवं युवतियों और उभरते हुए बालकों में भी जहाँ एक ओर नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं अंडा या चिकन सूप या अन्य सामिष भोजन का होटलों या रेस्टोरेंटों में ऐसे शाकाहारी परिवारों के सदस्य सेवन कर रहे हैं, जिनके घरों में प्याज और लहसुन भी नहीं आता था। इसलिए शाकाहार के पक्ष में व मदिरापान के विरोध में वैज्ञानिक तथ्यों सहित विवेचन इस लेख में करने का प्रयास किया गया है।

शाकाहार उत्तम आहार :–

यह एक विडंबना ही है कि जहाँ विदेशों में नैतिकता या स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण जगह–जगह लोग मांसाहार से शाकाहार की ओर आ रहे हैं, वहीं फैशन के कारण कहिये या अज्ञान के कारण, युवकों में और विशेषकर कालेज में पढ़ने वाले व्यक्तियों में मांसाहार की प्रवृत्ति बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है। जहाँ एक ओर यह अध्यात्म और धर्म के विरुद्ध आचरण है, वहीं सामिष भोजन अर्थात् मांसाहार नैतिकता की दृष्टि से एकदम गलत है। महाभारत में स्पष्ट लिखा गया है कि जो व्यक्ति मांसाहार करता है, बेचता है, खरीदता है, या उसके क्रय विक्रय में सहायक होता है वह भी मांसाहारी है।

फिर 'जियो और जीने दो' के नैसर्गिक, नैतिक सिद्धान्त के अनुसार जब किसी जीव को हम जीवन दे नहीं सकते तो हमें अपने स्वाद या स्वार्थ के लिए उसके प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं है। इस नैतिक सिद्धान्त के कारण ही पाश्चात्य देशों के महान मानव जैसे, सुकरात, अरस्तु, प्लेटो, रूसो, शैक्सपियर, हुरविन, न्यूटन, लियो, आइंस्टीन, टाल्सटॉय, जार्ज बनोर्ड शा, चर्चिल आदि पूर्णतः शाकाहारी बन गए।

अण्डा भी स्वास्थ्यवर्धक नहीं :–

आजकल प्रायः यह सुनने में आ रहा है कि बच्चों को अण्डे आदि के सेवन से अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह एक भ्रांति है, जिसका निराकरण 1985 के नोबल पुरस्कार विजेता डॉ0 माइकल एस० ब्राऊन तथा डॉ० जोसेफ एल0 गोल्डस्टीन नामक दो अमेरिकन डॉक्टरों ने किया जब उन्होंने यह साबित कर दिया कि हृदय के रोग के कारण ही अधिकांश मौतें होती हैं। उनके अनुसार कॉलस्टेरोल नामक तत्व को रक्त में जमने से रोकना बहुत ही आवश्यक है और, कॉलस्टेरोल अंडों में सबसे अधिक मात्रा में अर्थात् 100 ग्राम अण्डे में लगभग 500 मि0ग्रा0 पाया जाता है। यह वनस्पतियों एवं फलों में नहीं के बराबर होता है। परन्तु मांस, अंडों और जानवरों से प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है।

अब यह भी सिद्ध हो गया है कि अंडा सुपाच्य नहीं है। बल्कि अंडे के छिलके पर लगभग 15,000 सूक्ष्म छिद्रों के द्वारा कई जीवाणु अंडे में प्रवेश कर जाते हैं जो अंडे को खराब कर देते हैं। इससे हृदय रोग शुरू हो जाता है। इससे गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि 'इंटरनेशनल वेजिटेरियन यूनियन' एवं शाकाहारी संस्थाओं के द्वारा शाकाहार को विदेशों में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है।

शाकाहार पौष्टिक एवं स्वास्थ्य प्रदायक आहार है :– प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट आदि की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए शाकाहार पौष्टिक आहार है। जैसे, प्रति 100 ग्राम खाद्य में दालों में 24 प्रतिशत प्रोटीन व सोयाबीन में 43 प्रतिशत प्रोटीन होता है, वहाँ अंडे में कुछ 13 प्रतिशत व अन्य माँस व मछली में 18 से 22 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं, जैसे–घोड़ा, गेण्डा व हाथी। मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार विभिन्न रोगों की रोकथाम में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संघ ने ऐसी 160 बीमारियों के नाम अपने समाचार पत्र में घोषित किए हैं जो मांसाहार से फैलती हैं। इन बीमारियों में मिर्गी की बीमारी प्रमुख है। मानव पर सैंकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में 'कॉलेस्ट्रॉल' की मात्रा बढ़ जाती है और वनस्पति की चिकनाई उसे कम करती है। इस बात के लिये प्रचुर प्रमाण यह है कि 'आर्टिरियोस्कलेरोसिस' तथा 'कोरोनरी' हृदय रोगों में कोलेस्ट्रॉल बड़ा कारण है। लॉस एंजिल्स (अमेरिका) के डॉ0 मारिसन का कथन है कि कोलेस्ट्रॉल से अन्य कितने ही मानव रोग उत्पन्न होते हैं, यथा–पथरी। शरीर विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोगशाला के डॉक्टर मेर ने यह प्रदर्शित किया है कि मांसाहार से हृदय का क्रियाकलाप अत्यधिक बढ़ जाता है।

इसी प्रकार रक्तचाप, आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है। स्वास्थ्य के प्रेमियों के लिए अपने स्वयं के स्वास्थ्य हेतु यह आवश्यक है कि वे अंडे और अन्य मांसाहारी पदार्थों का सेवन कतई न करें।

मदिरापान से हानियाँ :–

नशा चाहे जैसा हो, वह स्वास्थ्य के लिए घातक है। विशेषकर मदिरापान की प्रवृत्ति और भी घातक है क्योंकि यह स्वभावतः मांसाहार और विषय विकार के प्रति मनुष्य को आकृष्ट करता है। कई बार कुछ व्यक्ति यह प्रश्न कहते हैं कि आखिर शराब के नशे को बढ़ते हुए रोग के रूप में और एक खराब आदत के रूप में क्यों गिना जाता है? इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों और धर्म ग्रन्थों के उद्गार मनन करने योग्य हैं। महान चिन्तक ग्लेडस्टोन के अनुसार युद्ध, अकाल और महामारी ने मिलकर मानव–जाति का इतना अहित नहीं किया, जितना अकेली शराब ने किया है। शराब के नशे की आदत से उत्पन्न आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दुष्प्रभावों का दायरा अत्यन्त व्यापक है।

शराब पीने के कुछ ही देर बाद उसमें मौजूद अल्कोहल रक्त में शामिल होकर रक्त कोशिकाओं के माध्यम से सारे शरीर में फैल जाता है। अल्कोहल से हमारा तात्पर्य इथाइल एल्कोहल से है। परन्तु बहुधा मिलावटी शराब में अत्यधिक विषाक्त मिथाइल एल्कोहल भी पाया जाता है। भिन्न–भिन्न प्रकार की शराब में भिन्न–भिन्न मात्रा में एल्कोहल भी पाया जाता है। जैसे देशी शराब में 35 से 50 प्रतिशत, बियर में 4 से 8 प्रतिशत या 10 प्रतिशत, स्प्रिट में 40 से 50 प्रतिशत, वाइन में 8 से 15 प्रतिशत यह पाया जाता है। केन्द्रीय स्नायु तंत्र शराब के प्रभाव से कुन्द (डिप्रेस्ड) हो जाता है। स्नायु तंत्र के उच्च केन्द्रों पर रोक लगने पर मनुष्य कुछ समय के लिए खुशहाली का अनुभव करता है जिससे वह आसानी से क्रोधित हो जाता है, बेवजह हंसता है, तथा बातें करता है और उसका व्यवहार असामाजिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी अपराध कर सकता है।

विटामिन 'बी' समूहों की कमी, आंखों पर दुष्प्रभाव, हृदय गति का तीव्र होना, गैस्ट्राइटिस और अल्सर आदि का बनना, यकृत की खराबी होकर असाध्य बीमारी (सिर्होसिस ऑफ लीवर) होने की संभावना बढ़ना आदि शराब के नशे के दुष्परिणाम हैं। शराब के नशे करने वाले व्यक्ति प्रायः अपच, अनिद्रा, पौरूषहीनता आदि गम्भीर रोगों के शिकार हो जाते हैं। धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है। निरुक्त के अनुसार सात महा पापों में शराब पीना भी सम्मिलित है (निरुक्त 6|27)। छान्दोग्य उपनिषद् में यह स्पष्ट कहा गया है कि 'शराब सभी पापों का कारण है'। चरक संहिता में लिखा है– 'शराब सभी कुकर्म कराने वाला और देह का नाश करने वाला है। शराब पीने वालों के लिए कोई भी औषधी असर नहीं करती है।'

मदिरापान मांसाहार है :–

विगन सोसाइटी के एक 'पोर्टल' में स्पष्ट किया गया है कि अधिकांश शराबों में खून, हड्डी, चर्बी और कई प्रकार के जानवरों और कीड़ों के हिस्सों का मिश्रण होता है। कुछ किस्मों की शराब में मछली का तेल और जिलेटिन और इंजिंगिलास मिलाये जाते हैं। इंजिंगिलास एक प्रकार का वह जिलेटिन पदार्थ है जो स्वच्छ पानी की मछलियों और विशेषकर स्टरजन मछलियों के ब्लेडर से निकाल कर प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार, जानवरों की कोशिकाओं और चमड़ी और उनके अन्य शरीर के हिस्सों को उबाल कर एक जेली का निर्माण होता है जिसे 'जिलेटिन' कहते हैं। जब ये पदार्थ अधिकांश शराबों में मिलाये जाते हैं तो शराब मांसाहार ही हो जाती है।

समाज के व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य है कि वे स्वयं भी शराब के नशे से बचें एवं धूम्रपान, गुटखे आदि के नशे से होने वाले दुष्परिणामों से अपनी नई पीढ़ी को समझायें। दृढ़ संकल्प से ही हम इनसे बच सकते हैं।

– अध्यक्ष भारतीय शाकाहार परिषद्

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- **www.facebook.com/SwamiAryavesh** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में 13 अप्रैल, 2024 को जलियांवाला बाग के शहीदों को समर्पित शिक्षक सम्मान समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

शिक्षक ही राष्ट्र निर्माण के कर्णधार होते हैं - स्वामी आर्यवेश

आजादी के आंदोलन में आर्य समाज की विशेष भूमिका है - स्वामी आदित्यवेश

समारोह में उपस्थित शिक्षकों ने संस्कारवान शिक्षा देने का लिया संकल्प

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष में 13 अप्रैल, 2024 को जलियांवाला बाग के शहीदों को समर्पित इस समारोह का आयोजन स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में धर्म प्रतिष्ठान तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हरियाणा गौरव एवं आर्य गौरव सम्मान समारोह में हरियाणा के लगभग 200 शिक्षक, खिलाड़ी तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप सभी महानुभावों को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं गायत्री मन्त्र का ओ३म् पट्ट भेंट किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कारयुक्त शिक्षा समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। स्वामी जी ने उपस्थित अध्यापकों का विशेष आह्वान किया कि समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षकगण अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायें। स्वामी जी ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के कर्णधार होते हैं, यदि हमारे देश के शिक्षक बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ उचित संस्कार प्रदान करते हैं तो निश्चित रूप से ही देश पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव तथा कार्यक्रम के संयोजक स्वामी अदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज का आजादी के आंदोलन में विशेष योगदान रहा है। आज उस विरासत को संभालने की आवश्यकता है। जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद दोबारा आजादी के आंदोलन को आगे बढ़ाने में आर्य संन्यासी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने विशेष भूमिका निभाई थी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने कहा कि संस्कार के अभाव में ही समाज से संवेदनशीलता समाप्त हो रही है, यही कारण है कि आज माता-पिता व बुजुर्गों का सम्मान होना बंद हो गया है, समाज को सही दिशा की ओर लेकर जाने वाले संस्कारों के महत्व को समझना पड़ेगा।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने आए हुए सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी और समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने के लिए सभी आगंतुकों को शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में विशेष रूप से खेड़ा खाप के प्रधान श्री सतबीर खटकड़, पुनिया खाप के प्रदेश अध्यक्ष श्री समशेर नंबरदार, कुण्डू खाप के राष्ट्रीय संयोजक श्री वीरेंद्र कुण्डू, राष्ट्रपति से सम्मानित श्री मनोज लाकड़ा, डॉ. आर. एन. यादव, श्री राम निवास आर्य, स्वामी रामवेश जी, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, श्री धर्मबीर सरपंच, डॉ. राजपाल आर्य, प्रिं. आज़ाद सिंह आर्य भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर संयोजक मंडल के सभी पदाधिकारी सर्वश्री सज्जन सिंह राठी, अशोक आर्य, हरपाल आर्य, मनोज लाकड़ा, प्रदीप कुमार, स्विटी भारती, अलका मदान, सुदर्शन पुनिया, श्रीमती रेणिका मलिक, पवन स्वामी, सुमन धनखड़ आदि विशेष रुप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।